बी.एस.ओ.सी.-112 : समाजशास्त्रीय अनुसंधान को विधियाँ – I
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : BASOH/ BAFSO
पाठ्यक्रम कोडः **BSOC-112**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एस.ओ.सी -112 /ए.एस.एस.टी./TMA/2026-27**
अधिकतम अंकः **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं।

सत्रीय कार्य – I

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1. सांस्कृतिक पूँजी से बॉर्डियु का क्या तात्पर्य है? 20

2. स्वतुल्यता (रिफ्लेक्सिटी) का क्या अर्थ हैं? सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में स्वतुल्यता कैसे उपयोगी है? स्पष्ट कीजिए। 20

सत्रीय कार्य – II

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3. रेडक्लिफ ब्राउन ने किस प्रकार शोध में तुलनात्मक विधि का प्रयोग किया? 10

4. सामाजिक शोध में ऐतिहासिक विधि की क्या प्रासंगिकता है? 10

5. दृष्टिकोणवादी सिद्धांतकायें द्वारा नारीवादी अनिवार्यता की क्या आलोचनाएँ थी? 10

सत्रीय कार्य – III

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6. अनुक्रमिकता क्या है? 06

7. इन्फॉर्म्ड कंसेंट (सूचित सहमति) क्या है? 06

8. पायलट स्टडी को परिभाषित कीजिए। 06

9. गुणात्मक शोध के क्या उद्देश्य हैं? 06

10. केस स्टडी विधि क्या है? 06

1. सांस्कृतिक पूँजी से बॉर्दियू का क्या तात्पर्य है?

उत्तर

सामाजिक असमानता को केवल धन, संपत्ति या आय के अंतर से नहीं समझा जा सकता। फ्रांसीसी समाजशास्त्री पियरे बॉर्दियू ने 'सांस्कृतिक पूँजी' की अवधारणा द्वारा बताया कि परिवार, शिक्षा, भाषा, रुचि, व्यवहार, ज्ञान और सांस्कृतिक संसाधन भी समाज में अवसर तथा प्रतिष्ठा के वितरण को प्रभावित करते हैं। किसी व्यक्ति के पास उपलब्ध सांस्कृतिक दक्षताएँ उसे विद्यालय, नौकरी और सामाजिक संबंधों में लाभ पहुँचा सकती हैं। इन्हीं अर्जित या विरासत में प्राप्त संसाधनों को बॉर्दियू सांस्कृतिक पूँजी कहते हैं। यह पूँजी आर्थिक पूँजी की तरह हमेशा प्रत्यक्ष रूप से दिखाई नहीं देती, किंतु इसके सामाजिक परिणाम गहरे होते हैं।

अवधारणा की पृष्ठभूमि

बॉर्दियू ने शिक्षा में सफलता को केवल जन्मजात प्रतिभा या व्यक्तिगत परिश्रम का परिणाम मानने पर प्रश्न उठाया। उनके अनुसार प्रभुत्वशाली वर्गों के बच्चों को परिवार में ही ऐसी भाषा, पुस्तकों, कलात्मक रुचियों, संवाद-शैली तथा आत्मविश्वास का परिचय मिलता है, जिन्हें विद्यालय 'योग्यता' का प्रमाण मानता है। दूसरे सामाजिक परिवेशों से आने वाले बच्चों में क्षमता की कमी आवश्यक नहीं होती; समस्या यह है कि शिक्षा संस्थाएँ कुछ विशेष सांस्कृतिक गुणों को अधिक मूल्य देती हैं। इस प्रकार सामाजिक लाभ शिक्षा के माध्यम से वैध उपलब्धि के रूप में सामने आ सकता है।

सांस्कृतिक पूँजी के तीन रूप

पहला, **अंतर्निहित अथवा देहधारित रूप** व्यक्ति के आचरण में बसा होता है। बोलने का ढंग, उच्चारण, साहित्यिक समझ, संगीत की अभिरुचि, अध्ययन-अनुशासन और सामाजिक अवसरों पर व्यवहार इसके उदाहरण हैं। इसे सीखने में समय लगता है। परिवार में बचपन से मिलने वाले संस्कार और प्रशिक्षण इसमें बड़ी भूमिका निभाते हैं। इसे केवल पैसे देकर तत्काल हासिल नहीं किया जा सकता।